4

विद्यालयों में पाठ्यक्रम संपादन हेतु भाषायी आयामों का चिह्नीकरण, विश्लेषण एवं उपयोग

शशि कुशवाहा*
सुनील कुमार सिंह**

भाषा अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है, जो मानव के विचार, भावों को संप्रेषण का रूप देती है। विद्यार्थियों की सहज व सशक्त अभिव्यक्ति ही आगे की नींव को मजबूत बनाती है, जो प्रभावशाली भाषा-शिक्षण से ही संभव है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार भाषा कौशलों के पुंज के रूप में, चिंतन और अस्मिता के रूप में स्कूल के सभी विषयों में मौजूद है। बोलना और सुनना, पढ़ना और लिखना सभी सामान्य कौशल हैं और उनमें बच्चों की दक्षता, स्कूल में उनकी सफलता को प्रभावित करती है। कई स्थितियों में इन सभी कौशलों को एक साथ उपयोग में लाने की ज़रूरत होती है। सभी विषयों को सीखने एवं सिखाने में भाषा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षक विद्यालयी पाठ्यक्रमों में निर्धारित विषयों के अंतर्गत मुख्य भाषायी आयामों को कक्षा शिक्षण व्यवहार में अपना कर विद्यार्थियों की सहज व सशक्त अभिव्यक्ति को विकसित करने में अग्रणी भूमिका निभा सकते हैं। विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रमों को पढ़ाने हेतु शिक्षकों में पाठ्यक्रम में भाषा जागरूकता की कमी के कारण अधिकांश विद्यार्थियों में भाषायी कौशलता, सहज अभिव्यक्ति, संप्रेषण तथा सृजनात्मकता की समस्या आज भी बनी हुई है। इन समस्याओं का निदान अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि भाषा शिक्षण की प्रखरता ही सभी विषयों के ज्ञान को प्रभावित करती है। कक्षा में शिक्षक इस लेख में दिए गए भाषायी आयामों को अपने शिक्षण के दौरान अपना सकते हैं। प्रस्तुत लेख पाठ्यक्रम में भाषायी आयामों को उजागर किया गया है।

भाषा मानव जीवन की एक सामान्य व सतत प्रक्रिया है। भाषा का आरंभ मानव जन्म के साथ ही हो जाता है। शिशु भाषिक क्षमता के साथ धरती पर जन्म लेता है तथा विशेष सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक संदर्भ में अपनी भाषा अनुकरण से सीख लेता है। अलग-अलग आयु के अनुसार बालक भावों को व्यक्त करने की भाषा सीख लेता है, क्योंकि उसे समाज में रहना है एवं समाज के व्यक्तियों से अपने

* *पूर्व-शोधार्थी*, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
** *प्रोफेसर*, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

संपर्क बनाए रखना है। भाषा स्वयं परिवर्तनशील होती है। भाषा संप्रेषण, विचार और भावों को जोड़ती है। विभिन्न कौशल जैसे— सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना और समझने को पूरा करते हुए व्यक्ति भाषा में निपुणता प्राप्त करता है। बाल्यावस्था हमारे जीवन की ऐसी अवस्था है, जिसमें हमारे जीवन के आगे के विकास की नींव रखी जाती है, यहीं से हममें विभिन्न आदतों, संस्कारों कौशलों तथा ज्ञान लेने की क्षमता के संवर्धन का प्रारंभ होता है। भारत के संविधान के 17वें भाग में अनुच्छेद 343 से 351 एवं आठवीं अनुसूची भाषा से संबंधित है। भाषा की महत्ता को शिक्षा आयोग (1964–1966) ने भी स्वीकार किया तथा त्रिभाषा-सूत्र को सभी राज्यों द्वारा अपनाने तथा क्रियान्वन का सुझाव दिया। बच्चों में भाषा शिक्षण को प्रभावशाली बनाने तथा विकास से संबंधित आवश्यकताओं पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में काफी बल दिया गया है कि बच्चों को पढ़ना सीखने के बारे में विचार करने तथा समझ विकसित करने की आवश्यकता है, ताकि बच्चों की पठन क्षमताओं का विकास किया जा सके। यह आलेख संबंधित साहित्य अध्ययनों के आधार पर लिखा गया है। इस आलेख के तीन भाग हैं। पहले भाग में पाठ्यक्रम में भाषा के संप्रत्यय, महत्व एवं इसके उद्देश्य का उल्लेख किया गया है। दूसरे भाग में पाठ्यक्रम संचालन में शामिल विभिन्न भाषायी आयामों का चिह्नीकरण किया गया है, तथा तीसरे भाग के अंतर्गत भाषायी आयामों का विधिवत विश्लेषण एवं कक्षा में सभी विषय में समाहित भाषायी आयामों के उपयोग का वर्णन किया गया है।

पाठ्यक्रम में भाषा का संप्रत्यय एवं इसके उद्देश्य

भाषा हमें नहीं अवधारणाओं को समझने में सक्षम बनाती है। विचारों को आदान-प्रदान करने और हमारे विचारों को संप्रेषित करती है। कृष्ण कुमार (2000) के अनुसार भाषा बच्चों के व्यक्तित्व को आकार देती है, जिसमें धारणाएँ, कौशल, रुचियाँ, आचरण और नैतिकता शामिल है; इसलिए यह कहना उचित होगा कि हर नई बात सीखने के केंद्र में भाषा है। भाषा अर्थ निर्माण करने का मूलभूत संसाधन तथा आदर्श माध्यम है। एक बच्चा भाषा के जरिए ही अपने आसपास के संस्कार की समझ बनाता है, किसी भी अवधारणा को प्रेषित करने के लिए और उनपर गहरी समझ बनाने के लिए आवश्यक है कि भाषा पर उसकी बेहतर पकड़ हो।

बच्चे घर में जिस भाषा का प्रयोग करते हैं विद्यालय जाने पर वहाँ प्रयोग की जाने वाली भाषा अलग होती है। विद्यालय में भाषा का प्रयोग विषय क्षेत्र के अनुसार भिन्न होता है। कक्षा में शिक्षक पढ़ाते समय माध्यम भाषा में विज्ञान और गणित आदि विषयों को समझाकर विषय ज्ञान विकसित करते हैं, जबकि भाषा विषय के रूप में (हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू आदि) शास्त्रीय साहित्य के बारे में बताया जाता है, इसलिए विद्यालय की माध्यम भाषा अमूर्त रूप से सभी विषयों को सीखने एवं सिखाने में कार्य करती है, जो आसानी से संचार के विभिन्न रूपों की एक विस्तृत शृंखला को संदर्भित करती है। यदि हम किसी भी भाषा को समझना चाहते हैं, विभिन्न उद्देश्यों के लिए उसका प्रयोग करना चाहते हैं या उसे सिखाना

चाहते हैं तो उसे हमें उस भाषा (चाहे वह अंग्रेजी हो या अन्य पहली, दूसरी या विदेशी भाषा) के भीतर की संरचना एवं प्रकृति को थोड़ा और करीब से देखना चाहिए। हुसैन (1985) ने लैंग्वेज अक्रॉस करिकुलम का अर्थ इस प्रकार स्पष्ट किया— पाठ्यक्रम में भाषा सीखने की प्रक्रिया में विद्यार्थियों की भाषा पर पूरे विद्यालय के प्रभाव से संबंधित शिक्षा सिद्धांतों और प्रथाओं के एक उभरते हुए निकाय को संदर्भित करती है, जो सीखने की प्रक्रिया में विद्यार्थियों की भाषा पर पूरे विद्यालय के प्रभाव से संबंधित है। पाठ्यक्रम में भाषा प्राथमिक रूप से विद्यार्थियों की पढ़ने-लिखने और बात करने की दक्षता से संबंधित है, जो कि व्यक्तिगत सामाजिक और शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करती है।

पाठ्यक्रम में भाषा कक्षा के प्रत्येक विषय में भाषा की मौजूदगी की बात करती है। भाषा शिक्षण केवल भाषा की कक्षा तक सीमित नहीं बल्कि विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, गणित की कक्षाएँ भी भाषा की ही कक्षा होती हैं। भारतीय भाषाओं का शिक्षण राष्ट्रीय फोकस समूह का आधारपत्र (2009), थारमैन (2013), वोल्मर (2006), कुमार (2000) एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, बीको (2016) द्वारा पाठ्यक्रम में भाषा की वकालत करते हुए बताया गया है कि एक कक्षा में प्रत्येक विषय में भाषा मौजूद होती है। पाठ्यक्रम में भाषा महत्वपूर्ण है, क्योंकि भाषा विभिन्न अर्थ संदर्भों के माध्यम से सर्वोत्तम रूप से प्राप्त की जाती है। शिक्षक कक्षा में विषय पाठ्यक्रम को भाषा द्वारा विद्यार्थियों के साथ संवाद करते हुऐ, उनके ज्ञान को बढ़ा सकते हैं, इसलिए शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो भाषा और सामग्री सीखने को एकीकृत करता है। सभी विषयों में सामग्री बनाना, सीखना और सिखाना भाषा पर निर्भर है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में भी सभी विषयों में उच्चतर गुणवत्ता वाली पाठ्य-सामग्री को घरेलू भाषाओं, मातृ भाषाओं में उपलब्ध कराए जाने की बात की गई है, साथ ही इसमें कहा गया है कि यह भी सुनिश्चित करने का प्रयास किया जाए कि विद्यार्थियों द्वारा बोले जाने वाली भाषा और शिक्षण के माध्यम भाषा के बीच कोई अंतराल मौजूद हो तो उसे समाप्त किया जाए और भाषा एवं बहुभाषा की शक्ति को बढ़ावा देने का प्रयास हो। कक्षा में भाषाओं के प्रति संवेदनशील शिक्षक अपने विषयों में सभी क्षमताओं को विकसित करने में सफल होने की अधिक संभावना रखते हैं। जब सभी विषयों के शिक्षक कक्षा में भाषायी प्रयोग से भलीभाँति परिचित हों तो सभी भाषाई कौशल के उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है। कुमार (2000) एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार विद्यालयी स्तर पर पाठ्यक्रमों में भाषा का प्रयोग इस प्रकार बताया गया है— सुनकर व पढ़कर तथ्यों को अपने सृजनात्मक क्षमता के आधार पर तथा उसे संदर्भो से जोड़कर बोलने एवं लिखने की योग्यता का विकास करना। कक्षा में किसी भी विषय सामग्री को सीखने हेतु भाषा निम्न रूपों में कार्य करती है—

- अवधारणाओं को सीखना।
- शब्दावली को सीखना।
- आलोचनात्मक ढंग से चर्चा करना।
- सुनने, बोलने, पढ़ने एवं लिखने के रूप में।

वोल्मर (2009), इस लेख में विषय सीखने में शामिल विशिष्ट भाषायी आवश्यकताओं और लक्षणों का वर्णन किया गया और अभिव्यक्ति के अन्य प्रतीकात्मक साधन सोचने और प्रक्रिया संबंधी विचारों को आकार देने के एक उपकरण के रूप में बताया गया है। ये इस प्रकार हैं—

- विषय क्षेत्र में पढ़ने की समझ विकसित करने के लिए मिलते-जुलते उदाहरण प्रस्तुत करना।
- कक्षा में बहुभाषी विविधता को समझने हेतु।
- पाठ्यक्रम में भाषा बहुभाषी सिद्धांतों पर आधारित होती है।
- कक्षा में मौखिक रणनीति बनाने के लिए आवश्यक है।
- कक्षा में मौखिक भाषा का प्रयोग दक्षता एवं प्रश्नों की प्रकृति, प्रकार, बनावट पर बल देना।
- कक्षा में लिखने, पढ़ने, बोलने व सुनने का समुचित प्रयोग करना।
- ऐसी रणनीति बनाना जिससे कक्षा की प्रकृति समझ में आए।
- ऐसी मौखिक भाषा का प्रयोग हो, जिससे विषय की जानकारी को बढ़ावा दिया जा सके।

पाठ्यक्रम में भाषा के महत्व को ध्यान में रखते हुए एन.सी.टी.ई. द्वारा निर्धारित बीएड पाठ्यक्रम (2016) में 'लैंग्वेज अक्रॉस करिकुलम' को शामिल किया गया। इसमें बताया गया है कि है कक्षा में ऐसी रणनीति विकसित की जाए, जिससे कि विद्यार्थियों के विकास के साथ-साथ भाषाओं का विकास हो सके, क्योंकि विषयों के ज्ञान को भाषा द्वारा ही संपोषित किया जाता है। किसी भी विषय सीखने का अर्थ है— शब्दावली सीखना, अर्थ समझना, अवधारणा और उनके बारे में आलोचनात्मक रूप से चर्चा करना और लिखने में सक्षम होना, भाषा कहलाता है। विचारों को समझने का माध्यम चिंतन और चिंतन के साथ-साथ अभिव्यक्ति का माध्यम भी भाषा है, हालाँकि विषय चाहे जो भी हो शिक्षण एक भाषा मुक्त वातावरण में नहीं हो सकता। विद्यार्थियों की भाषा ज्ञान और पृष्ठभूमि संबंधित धारणाएँ कक्षा की अंतः क्रियाओं, शैक्षणिक निर्णय और सीखने की प्रकृति को प्रभावित करती हैं। विद्यार्थियों की भाषायी पृष्ठभूमि को समझना और यह जानना महत्वपूर्ण है कि वह मौखिक और लिखित भाषा का उपयोग कक्षा में विषय ज्ञान शिक्षा को सुनिश्चित करने के लिए किया जा रहा है या नहीं। पाठ्यक्रम में भाषा वास्तविकता में बहुभाषा को बढ़ावा देना है, समझ की प्रकृति को विकसित करने में पाठ्यक्रम में भाषा की कल्पना की गई है। कक्षा प्रवचन का महत्व यह मजबूत करेगा कि भाषा में पढ़ने, सोचने, चर्चा करने और संवाद करने के साथ-साथ लिखने की क्षमता विकसित करना है। कक्षा में पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों और शिक्षकों को कक्षा प्रवचन की प्रकृति को समझने और मौखिक का प्रयोग करने के लिए रणनीति विकसित करने में सहायता करता है। कक्षा में भाषा इस तरह से है जैसे कि विषय क्षेत्र में सीखने को बढ़ावा देता है। एन.सी.टी.ई. द्वारा निर्धारित बीएड पाठ्यक्रम (2016) में शिक्षकों के लिए भाषा के उद्देश्य निम्न प्रकार से बताएँ गए हैं—

- विद्यार्थियों की भाषा पृष्ठभूमि को समझने में सहायता देना।
- कक्षा प्रवचन की प्रकृति को समझना।
- सूचनात्मक पठन की प्रकृति और आवश्यकता को समझना।
- सामग्री क्षेत्रों को समझने और उनका विश्लेषण करने और लिखने में सहायता प्रदान करना।
- सामग्री क्षेत्रों (पाठ्य सामग्री) के लिए भाषा के महत्व और भूमिका को समझना।
- भाषा पाठ्यक्रम के उद्देश्य विद्यार्थियों के भाषा विकास में सहयोग करना।
- भाषा उपयोग के सभी कार्यक्षेत्र में भाषा विकास का समर्थन करना।
- विद्यालय में सभी क्रियाकलाप को सीखने में भाषा विकास का समर्थन करना।
- विद्यालय के बाहर भी भाषा विकास का समर्थन करना।
- जीवन के सभी परिप्रेक्ष्य को समझने में भाषा का समर्थन करना।

हिमेल जे. (2012) के अनुसार कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए विभिन्न विषय के अंतर्गत भाषा उद्देश्य के प्रभावशाली उपयोग का वर्णन किया है, जो इस प्रकार है—

तालिका 1

विज्ञान शिक्षण		
सामग्री	**विषय उद्देश्य**	**भाषा उद्देश्य**
ठोस, तरल व गैस	विद्यार्थी तरल पदार्थ, ठोस व गैसों के बीच अंतर करने में सक्षम होंगे तथा प्रत्येक का एक उदाहरण प्रदान करेंगे।	तरल, ठोस एवं गैस का मौखिक रूप से वर्णन कर पाएँगे।
गणित शिक्षण		
सामग्री	**विषय उद्देश्य**	**भाषा उद्देश्य**
रेखा एवं कोणों की पहचान	विद्यार्थी कोणों के आधार पर त्रिकोण वर्गीकृत करने में सक्षम होंगे।	त्रिभुज एवं उनके कोणों के विवरण को पढ़ने में सक्षम होंगे।
सामाजिक विषय शिक्षण		
सामग्री	**विषय उद्देश्य**	**भाषा उद्देश्य**
एक दूसरे पर निर्भरता	विद्यार्थियों में यह दिखाने में सक्षम होगा कि नक्शा बनाकर भौगोलिक सुविधाओं में औपनिवेशिक जीवन को कैसे प्रभावित किया है।	भूगोल में औपनिवेशिक जीवन को प्रभावित करने वाले विद्यार्थी लिखित रूप में संक्षेप में सक्षम होंगे।
भाषा शिक्षण		
सामग्री	**विषय उद्देश्य**	**भाषा उद्देश्य**
तर्क व समर्थन	विद्यार्थी अपने निष्पादन निबंध को तैयार करने में सक्षम होंगे।	विद्यार्थी लिखित / मौखिक रूप से वाक्यांश का प्रयोग करने में सक्षम होंगे।

अतः इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यक है कि पाठ्यक्रम में भाषा के विविध आयामों के माध्यम से भाषा कौशल की महत्ता व उपयोग करने के विभिन्न तरीकों को सिखाना चाहिए, जिससे शिक्षक कक्षा में उसका प्रयोग करके विद्यार्थियों में इस कौशल का विकास कर सके। इसके लिए आवश्यक है कि पाठ्यक्रम में भाषायी आयामों का स्पष्ट एवं क्रमबद्ध ज्ञान शिक्षकों को होना चाहिए, जिससे विभिन्न विषयों के शिक्षक लाभान्वित हो सके।

पाठ्यचर्या में भाषायी आयामों का चिह्नीकरण

वोल्मर (2009) ने कक्षा में अवधारणा निर्माण के लिए चार आयामी मॉडल प्रस्तुत किया है, जो इस प्रकार है— (1) संचार (2) विषय विशिष्ट ज्ञान (3) प्रक्रियात्मक क्षमता (4) मूल्यांकन। कृष्ण गोपाल (2001) ने कक्षा भाषा व्यवहार के 5 आयामों— संदर्भ, विषयवस्तु, विधा, शैली और भाषा को भी कक्षा भाषा व्यवहार के आयाम के रूप में स्वीकार किया गया है। ये चार भाषा कौशल संप्रेषण संबंधी दो ध्रुवों— अर्थग्रहण और अभिव्यक्ति में अंतर्निहित बताएँ हैं। लिन, ए.एम. (2016) शैक्षणिक भाषा के चार आयाम प्रस्तुत किए हैं— (1) शब्दकोश, (2) वाक्य विन्यास, (3) भाषा कार्य, (4) प्रवचन (बातचीत)। थारमैन (2013) ने पाँच आयामों का उल्लेख किया है। इन सभी आयामों को व्यवस्थित रूप से तालिकाबद्ध किया गया है—

तालिका 2

अध्ययन	भाषायी आयाम	भाषा प्रयोग
वोल्मर (2009)	विषय विशिष्ट ज्ञान	विषय सामग्री में निहित आधारभूत तथ्य, अवधारणाएँ, परिभाषाएँ, विभिन्न सिद्धांत आदि को कार्य गतिकी के माध्यम से विकसित करना।
	प्रक्रियात्मक क्षमता	सभी विषय के निर्माण सूत्र अलग-अलग होते हैं, उदाहरण— जीव-विज्ञान परिभाषित करना, निरीक्षण करना, तुलना करना, प्रयोग करना, मॉडलों का उपयोग करना और नीतियों को लागू करना तथा अन्य कार्य।
	संचार	संबंधित विषय में विशिष्ट एवं तर्क पूर्ण जानकारी प्राप्त करने, अनुमानित करने तथा उसके बारे में सूचना का आदान-प्रदान करना।
	मूल्यांकन	विविध संदर्भों में जैविक, रासायनिक भौतिक तत्वों के मुद्दों की पहचान उनका मूल्यांकन करना।
लिन ए.एम. (2016)	शब्दकोश	विषयों के अंतर्गत आए कठिन व नवीन शब्दों का कोश तैयार करना।
	वाक्य विन्यास	वाक्य संरचना एवं अर्थ को समझना।
	भाषा कार्य	विषयों के अंतर्गत विभिन्न पाठों में दिए गए अभ्यास कार्य को सचेतन रूप से करवाना।
	प्रवचन (बातचीत)	कक्षा में प्रवचन को बढ़ावा देना।
	लेक्सिको ग्रामैटिकल आयाम	विषयों के अंतर्गत आने वाले तकनीकी शब्द तथा व्याकरण का प्रयोग।
	व्याख्यान आयाम	विद्यार्थियों के स्तरानुसार पाठ के उद्देश्य, प्रासंगिक कारकों, संगठनात्मक और सामंजस्य विचारों के विकास, पाठ की संरचनाओं, पैराग्राफ इत्यादि के बारे में जागरूक किया जाता है।

	संज्ञानात्मक आयाम	ये सोच कौशल से संबंधित है तथा ये कक्षा में शैक्षणिक दृष्टिकोण के लिए अत्यधिक प्रासंगिक है।		
	सामाजिक सांस्कृतिक आयाम	ये विद्यार्थियों में स्कूल विषयों के प्रति समझ एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोण हेतु समुदायों से संबंधित व्याख्यान पर आधारित है।		
	सामाजिक मनोवैज्ञानिक आयाम	ये भाषा जागरूकता और नई मौखिक आदतों तथा संचार को अपनाने के लिए प्रभावित रणनीतियों पर आधारित होती है।		
वोल्मर (2006)	सुनना	मौखिक इनपुट		
	बोलना	अर्थपूर्ण पाठों को समझकर लिखना।		
	पढ़ना	लिखित पाठों के अर्थ समझकर लिखना।		
	लिखना	लिखित पाठों के अर्थ को समझना।		
	दृश्य	दृश्य संकेत तथा सूचना में भाग लेना।		
	आकार देना	अभिव्यक्ति के दृश्य साधनों का उपयोग करना।		
	सतर्कता के साथ देखना	कक्षा के सभी क्रिया में सहभागिता को देखना व शामिल होना।		
	चलना	पूरे शरीर का उपयोग करते हुए आत्म-अभिव्यक्ति।		
कृष्ण गोपाल (2001)	अधिग्रहण (सुनना, पढ़ना)	सुनना	बोधात्मक	सर्जनात्मक
	अभिव्यक्ति (बोलना, लिखना)	प्रत्यास्मरण	रचनात्मक	सर्जनात्मक

उपरोक्त अध्ययनों की समीक्षा के आधार पर कहा जा सकता है कि कक्षा में कई प्रकार के भाषायी आयाम विषयों को सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं, प्रत्येक विषय के केंद्र में भाषा निहित होती है। बोलना और सुनना, पढ़ना और लिखना ये सभी भाषा के आयाम हैं, भाषायी आयामों का संबंध भाषा के चार कौशलों से है— 1. सुनकर अर्थग्रहण करने की योग्यता का विकास। 2. पढ़कर अर्थग्रहण करने की योग्यता का विकास। 3. बोलकर (मौलिक अभिव्यक्ति) अपने भावों एवं विचारों को व्यक्त करने की योग्यता का विकास। 4. लिखकर अभिव्यक्ति करने की योग्यता का विकास। कृष्ण गोपाल (2001) द्वारा सर्जनात्मकता को भी भाषाई आयाम के अंतर्गत मुख्य माना गया है, क्योंकि यही वह आयाम है जिसमें भाषा ग्रहणशीलता (सुनकर-पढ़कर) के बाद सर्जनात्मकता (आंतरिक प्रक्रिया) प्रारंभ होती, इसके बाद ही अभिव्यक्ति (लिखकर-बोलकर) की जाती है। इन आयामों के माध्यम से विद्यार्थियों को पाठ्यक्रमों में निहित ज्ञान का संचरण, विकास एवं हस्तांतरण का प्रयास किया जाता है, और ये कक्षा में विद्यार्थियों की दक्षता और उनकी सफलता को प्रभावित करती है।

इस लेख में तीन प्रकार के मुख्य भाषायी आयामों को चिह्नीकरण किया गया है। इन सभी आयामों का

कक्षा में पाठ्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिए शिक्षक एवं शिक्षार्थी द्वारा इसका उपयोग किया जाता है।

भाषायी आयामों का विश्लेषण एवं उपयोग

सभी विषयों के ज्ञान निर्माण को सीखने के संबंध में भाषा महत्वपूर्ण है। सभी विषयों में विशिष्ट सोच और ज्ञान निर्माण के लिए एक उपकरण के रूप में भाषा कार्य करती है। स्वयं सीखने के लिए भी भाषायी आयामों के द्वारा ही विषय ज्ञान, धारणाओं मुद्दों के साथ वैज्ञानिक अवधारणाओं का उपयोग करना सीखा जाता है। वोल्मर (2009) ने कक्षा में विभिन्न विषयों के शिक्षण के दौरान भाषायी आयामों के विश्लेषण एवं उपयोग को निम्नलिखित रूपों में उजागर किया है—

- याद करना, विश्लेषण करना, व्याख्या करना, प्रयोग करना और वैज्ञानिक जानकारी या विचारों पर सवाल करना।
- गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों दृष्टिकोण का उपयोग करना।
- जानकारी प्रस्तुत करना, विकसित करना और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का उपयोग करके निष्कर्ष निकालना, तकनीकी और गणितीय भाषा परंपराएँ और प्रतीक पर आईसीटी उपकरण का प्रयोग करना।

थारमैन (2013) के अनुसार कक्षा में विषयों को सीखने में भाषायी आयामों का उपयोग इस प्रकार किया, जैसे—

- भाषा, उच्चतर क्रम, सोच कौशल और सफल सामग्री सीखने के लिए आवश्यक रूप से भाषा का प्रयोग।
- अर्थ के लिए एक उपकरण के रूप में भाषा का प्रयोग।
- सीखने के परिणामों का आकलन के रूप में भाषा का प्रयोग।
- मौखिक संचार तथा व्याख्यान के रूप में भाषा का प्रयोग।
- सीखने के परिणाम के रूप में भाषा का प्रयोग।
- उपलब्धि व मूल्यांकन की चर्चा के रूप में भाषा का प्रयोग।

उपरोक्त साहित्य सर्वेक्षणों के आधार पर भाषा आयामों का चिह्नीकरण किया गया— (1) भाषा ग्रहणशीलता (2) भाषा सृजनात्मकता (3) भाषा अभिव्यक्ति, इन तीनों आयामों का विश्लेषण एवं उपयोग तालिका 3 से 5 में प्रस्तुत किया गया है—

भाषा ग्रहणशीलता आयाम

ग्रहणशीलता से संबंधित भाषायी आयाम से तात्पर्य है कि विद्यार्थियों में किसी भी विषय ज्ञान को जब उसे प्रदान किया जाता है, तो वह उसे सचेत होकर आत्मसात करे। भाषायी ग्रहणशीलता के अंतर्गत सुनना (श्रवण) तथा पढ़ना भाषा कौशल आता है, जिसके माध्यम से भाव व विचार का बीज रोपा जाता है। विद्यार्थियों में ग्रहणशीलता से संबंधित भाषायी कौशल इनपुट का कार्य करता है, जितना अच्छा इनपुट विद्यार्थी में होगा, उतना अच्छा आउटपुट अर्थात अभिव्यक्ति सार्थक होगी। अच्छा इनपुट तभी होगा जब शिक्षक विद्यालय की माध्यम भाषा एवं विद्यार्थियों के घर की भाषा को जोड़ते हुए विषय सामग्री को प्रस्तुत करें, तभी विद्यार्थियों द्वारा विषय ज्ञान अधिक सशक्त एवं प्रभावशाली रूप से अपनाया

तालिका 3

ग्रहणशीलता (सुनना-पढ़ना)		
शब्द	**अर्थ**	**वाक्य**
1. कोश तैयार करना 2. व्युत्पत्ति शब्द को छाँटना व समझना 3. परिभाषिक शब्द 4. शब्द समूह को ढूँढ़ना 5. शब्द तुलना करने में सक्षम बनाना	1. कोश अर्थ को जानना 2. व्यावहारिक अर्थ को समझना 3. व्याकरण समझ का बढ़ावा 4. उपमान व व्याख्या की समझ को विकसित करना 5. ज्ञान का सानिध्य 6. अनुवाद करने में सझम बनाना 7. बलाघात व सुरलहर पर ध्यान देना	1. अर्थपरक वाक्य रचना 2. संरचनापरक वाक्य की जानकारी 3. व्याकरणीपरक वाक्य पर ध्यान देना 4. मनोवैज्ञानिकपरक वाक्य को समझना 5. संदर्भपरक वाक्य को जोड़ने में सक्षम बनाना

जाता है। ग्रहणशीलता को सशक्त बनाने हेतु शिक्षक निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार विद्यार्थियों में तीन बिंदुओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है— 1. शब्द, 2. अर्थ, 3. वाक्य। शिक्षक अपने विषय के अनुरूप चयनित अध्याय से उन शब्दों का चयन नीचे दी गई तालिका संख्या— 3 में निम्न बिंदुओं के अनुसार तैयार करवाकर शब्दकोश का विकास विद्यार्थियों में निरंतर करवाएँ। इसके बाद उन शब्दों के अर्थ को विभिन्न संदर्भों में समझाने तथा विद्यार्थी को स्वतः समझने में सहायता प्रदान करें। जब उनमें व्यापक शब्द व अर्थ तैयार होगे तो वाक्यों की रचना निम्नलिखित आधारों पर जैसे— अर्थपरक, संरचनापरक, व्याकरणीपरक, मनोवैज्ञानिक तथा संदर्भ वाक्यों की रचना पर बल दिया जाए।

ये भाषायी आयामों से संबंधित ऐसे कौशल हैं जिनके द्वारा विद्यार्थियों में विषयों में निहित ज्ञान को सरलता एवं सहजता से आत्मसात किया जा सकता है।

भाषा सृजनात्मकता आयाम

सृजनात्मकता का भाषा आयामों में विशेष महत्व है क्योंकि इसी के माध्यम से विद्यार्थियों में आंतरिक अभिव्यक्ति को बाह्य रूपों से जोड़ने का कार्य किया जाता है। विद्यार्थी कक्षा में या कक्षा के बाहर ऐसी क्रियाओं को करता है, जो उसका स्वयं का प्रतिनिधित्व करती है। वह क्या कहता है? कैसे कहता है? ये सभी क्रिया उसके मानसिक सृजन से जुड़ी होती हैं। कक्षा में कुछ बच्चे तुरंत उत्तर देने में माहिर होते है, तो कुछ जवाब देने में असहज महसूस करते है तथा कुछ बिल्कुल शांत होते हैं। इन सभी समस्याओं के मूल में सृजनात्मक की भूमिका होती है। जब विद्यार्थी के अंदर शब्द होंगे तो वह उनमें विभिन्न परिस्थितियों से उसका संबंध स्थापित कर सकते हैं। कक्षा के साथ-साथ विद्यार्थी उन शब्द का संबंध सहचर्य समाज में अंतर्निहित क्रियाओं से भी लगाते है। "बच्चों की भाषा का संबंध उन अनुभवों से है, जिन्हें वे अपने हाथों और शरीर से स्वयं करते हैं और उन वस्तुओं से भी है जिनके संपर्क में वे आते हैं। बचपन में शब्द व क्रियाकलाप साथ-साथ चलते हैं।

तालिका 4

सृजनात्मकता			
धारा प्रवाहिता	**लचीलापन**	**मौलिकता**	**विस्तारण**
1. शब्द संबंध की पहचान। 2. साहचर्य स्थापित करना। 3. विचारों की खुली अभिव्यति की प्रस्तुती पर जोर।	1. भाषा को विभिन्न तरीको से प्रयोग करना। 2. बहुमुखता व बहुभाषिकता को बढ़ावा देना। 3. विभिन्न भाषा शैली को अपनाना।	1. नवीन शब्दों का प्रसार करना। 2. संकल्पना को प्रस्तुत करने में सक्षम बनाना। 3. अनुक्रियाओं में अनोखापन या नयापन दिखाना।	1. भाषा क्षमता को बढ़ावा। 2. संगठित समूहों में कार्य का संचालन। 3. भाषा विस्तार के प्रति जागरूक बनाना। 4. नए विचारों को प्रकट करने में सहायता प्रदान करना।

बच्चों के शारीरिक अनुभवों और शब्दों के बीच यह संबंध शिक्षक पर एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी डालता है।" कृष्ण कुमार (2000) के अनुसार, शिक्षक को विषयों के अंतर्गत आने वाले उन शब्दों का चयन करना चाहिए तथा उन्हें सृजनात्मक के चार आधारों से जोड़कर कक्षा की कुछ क्रियाओं का संचालन करना चाहिए, जिनके उपयोग का विवरण तालिका 4 में दिया गया है—

भाषा अभिव्यक्ति आयाम

कोई भी भाषा कितनी समृद्ध है इसका आकलन अभिव्यक्ति के माध्यम से होता है। अभिव्यक्ति भाषा का मुख्य आयाम है। समाज में व्यक्ति के अभिव्यक्ति का विशेष महत्व है, क्योंकि इसके द्वारा हम क्या चाहते हैं, क्या सोच रहे हैं तथा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति विशेष रूप से इसी के माध्यम से करते हैं। इसके साथ ही साथ दूसरों को जानने का प्रयास भी करते हैं। कृष्ण कुमार (2000) ने बच्चों को बातचीत के लिए प्रोत्साहित करने वाले अवसरों को पाँच कोटियों में रखा है— (क) अपने बारे में बातचीत करने के अवसर देना। (ख) विद्यालयी अनुभवों पर बात करने का अवसर देना। (ग) तस्वीरों पर चर्चा करना, जैसे— (i) ढूँढ़ना (ii) तर्क करना (iii) आरोपण (iv) भविष्यवाणी (v) संबंध बैठाना। (घ) कहानी सुनना और चर्चा करना। शैफाली (2012) मानती है कि एक व्यक्ति को जितने ज्यादा दृश्य संकेत दिखेगें, वह बातचीत करने में उतना ही ज्यादा सक्षम होगा। इसी क्रम में उन्होंने टीवी विज्ञापन संवाद शुरू करने के रूप में प्रयोग पर बल दिया है, जिससे विद्यार्थियों में विज्ञापन के संदर्भ में तार्किक विश्लेषण के साथ संवेगात्मक और संज्ञानात्मक विकास भी किया जा सके। भाषा अभिव्यक्ति के तीन मुख्य माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने भाव को व्यक्त करते हैं। 1. बोलना 2. लिखना 3. संवाद या संप्रेषण। तालिका 5 में कुछ बिंदुओं पर प्रकाश डाला गया है, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों में अभिव्यक्ति की कौशलता का विकास किया जा सकता है—

तालिका 5

अभिव्यक्ति (बोलना-लिखना)		
बोलना	**लिखना**	**संवाद**
1. ध्वनि का ज्ञान 2. शुद्ध उच्चारण का अभ्यास करवाना 3. स्पष्टता का ध्यान रखना 4. धारा प्रवाह को बढ़ावा 5. पकड़ को मजबूत बनाना 6. शैलियों की पहचान करवाना	1. भाषायी क्रम व व्याकरण का ज्ञान 2. उद्देश्य की पहचान 3. स्पष्टता व सरलता 4. निष्पक्षता का भाव 5. तार्किकता व विश्लेषण की समझ 6. लेखन जाँच की आदत को बढ़ावा 7. सुधार की दृष्टि का विकास 8. अभ्यास का गुण विकसित करना	1. प्रयोजन को समझना 2. संबंध व परस्थिति को जानना 3. भाषा व्यवहार पैटर्न के प्रति सचेत 4. शैली गत संवाद पर बल देना 5. क्षेत्रीय परिवेश की पहचान को बढ़ावा

उपसंहार

उपर्युक्त विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रत्येक बच्चे के पास अपनी भाषा, अपने अनुभव और दुनिया को देखने का नजरिया होता है। जब बच्चे अपने घर-परिवार एवं परिवेश के अनुभव को लेकर विद्यालय आते हैं, तब वे बहुत ही समृद्ध होते हैं। इनका प्रयोग भाषायी पूँजी के रूप में सीखने-सिखाने के लिए करना चाहिए। इसी संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में भी कक्षा शिक्षण में बहुभाषिकता को अपनाएँ जाने को आवश्यक बताया है। कक्षा में सीखने और सिखाने के संबंध में यह आवश्यक है कि विद्यार्थी विषयों से परिचित और अपरिचित संदर्भ के अनुसार भाषा का सही उपयोग करना जानें, जिससे कि वे सहज, कल्पनाशील, प्रभावशाली और व्यवस्थित ढंग से लेखन कर सकें। वे भाषा को प्रभावशाली बनाने के लिए सही शब्दों एवं वाक्यों का प्रयोग कर सकें। इस प्रकार कक्षा के सभी विषयों के अंतर्गत एक साथ सुनना, बोलना पढ़ना और लिखना जुड़ा है। पाठ्यक्रम संबंधित समस्त अपेक्षाओं को पूरा करने में इन भाषायी आयामों की बड़ी भूमिका होती है। इन आयामों के बिना, सीखने से संबंधित अपेक्षित उद्देश्य एवं सीखने के प्रतिफल की संप्राप्ति नहीं की जा सकती। इसी कारण राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में इस बात पर बल दिया गया है कि, पूरे प्रारंभिक और माध्यमिक विद्यालय पाठ्यचर्या के दौरान एक मजबूत, सतत, रचनात्मक और अनुकूल मूल्यांकन प्रणाली के साथ प्रत्येक विद्यार्थी के सीखने को ट्रैक किया जाए, जिससे वे सामान्यता पढ़ने, लिखने, बोलने, गिनने एवं चिंतन पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकें। बच्चों का न्यूनतम अधिगम स्तर निर्धारित किया जाना चाहिए और बच्चों का नियमित अंतराल पर आकलन होना चाहिए, ताकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लक्ष्य के अनुरूप सभी विद्यार्थियों को कम से कम न्यूनतम अधिगम स्तर का ज्ञान हो, जिससे उनकी प्रगति का प्रत्यक्षीकरण हो। पाठ्यक्रम में भाषा प्रयोग की जागरूकता के उपरांत इस लक्ष्य को प्राप्त करने में विशेष रूप से सहायता मिल सकती है।

संदर्भ

आल सबजेक्ट— ए हैंड बुक फॉर करीकुलम डेवलपमेंट एंड टीचर ट्रेनिंग. कौंसिल ऑफ यूरोप. https://scholar.google.com/scholar?hl=en&as_sdt=0%2C5&q=the+language+dimension+in+all+subjects+&btnG= 13/5/2022

कुमार, कृष्ण. 2000. *बच्चे की भाषा और अध्यापक : एक निर्देशिका*. नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली.

थारमैन, ई. 2013. *द रोल ऑफ लैंग्वेज इन लर्निंग एंड टीचिंग स्कूल सब्जेक्ट*. https://www.coe.int/..../Thurmann_ conf13...RoleLangSc...(2013)

बीको. जे.सी., एम. फ्लेमिंग, एफ. गॉलियर, ई. थारमैन, एच. वोल्मर. और जे. शिल्स. 2016. द लैंग्वेज डाइमेंशन इन आल सबजेक्ट : ए हैंड बुक फार करीकुलम डेवलपमेंट एण्ड टीचर ट्रेनिंग. कौंसिल आफ यूरोप. https://scholar.google.com/scholar?hl=en&as_sdt=0%2C5&q=the+language+dimension+in+all+subjects+&btnG= 13/5/2022

रस्तोगी, कृष्ण गोपाल. 2012. *मातृ भाषा शिक्षण*. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद, नई दिल्ली.

रा.शै.अ.प्र.प. 1964–1966. *एजूकेशन एंड नेशनल डेवलपमेंट रिपोर्ट ऑफ द एजूकेशन कमीशन*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

———. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

———. 2009. भारतीय भाषाओं का शिक्षण. *राष्ट्रीय फोकस समूह का आधारपत्र*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

रे, शेफाली. 2012. यूजिंग लैंग्वेज इन द कम्युनिटी फॉर इनहैंसिंग कम्युनिकेशन स्किल्स. *लैंग्वेज एंड लैंग्वेज टीचिंग जर्नल*. वॉल्यूम 1, नं 1,. पृ.सं. 12–17. 06 अप्रैल, 2017 को www.azimpremjifoundation.org से प्राप्त।

लिन, ए.एम. 2016. लैंग्वेज अक्रॉस द करिकुलम एंड सेल इन इंग्लिश एज एन एडिशनल लैंग्वेज (इ.ए.) कॉनटेक्स : थ्योरी एंड प्रैक्टिस. *सिंगापुर स्प्रिंगर*. https://scholar.google.com/scholar?hl=en&as_sdt=0%2C5&q=language+across+the+curriculum&oq=

वोल्मर, एच.जे. 2006. *लैंग्वेज अक्रॉस द करिकुलम यूरोप : इंटरगवर्मेंटल कॉंफ्रेंस लैंग्वेज ऑफ स्कूलिंग : टुवर्ड्स ए फ्रेमवर्क*. https://www.universitas.com

———. 2009. लैंग्वेज अक्रॉस द करिकुलम. *इन प्रोसीडिंग्स फ्रॉम द कॉंफ्रेंस ऑफ लैंग्वेज इन एजुकेशन*. लुब्लियाना, स्लोवेनिया. पृ.सं. 27–39. https://scholar.google.com/scholar?hl=en&as_sdt=0%2C5&q=language+across+the+curriculum&oq

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

हिमेल, जेनिफर. 2012. *लैंग्वेज ऑब्जेक्टिव : द की टू इफेक्टिव कॉन्टेमट एरिया इनस्ट्रक्शन*. https://www.colorincolorado.org/article/language-objectives-key-effective-content-area-instruction-english-learners

हुसैन, टार्स्टर्न. 1985. *इनसाइक्लोपीडिया ऑफ एजूकेशन*. वोल्युम 5 : प्रेगामोन प्रेस. न्यूयार्क.